दिव्य जीवन

Vol. XXIII	मार्च २०१३	No. 12

उपनिषद्-सुधा बिन्दु

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः ।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते ।।

(कठोपनिषद् : १/२/२)

(यमराज ने कहाह्ह) ''श्रेय और प्रेय (दोनों ही) मनुष्य के सामने होते हैं। बुद्धिमान् मनुष्य उन दोनों के स्वरूप पर भलीभाँति विचार करके उनको पृथक्-पृथक् जान लेता है। वह श्रेय को ही प्रेय की अपेक्षा श्रेष्ठ समझ कर ग्रहण करता है। (परन्तु) मन्द बुद्धि वाला मनुष्य योगक्षेम की इच्छा से शरीर की खातिर प्रेय को अपना लेता है।''

श्री शिवानन्दस्तोत्रम्

श्री स्वामी भागवतानन्द जी

अचिन्त्यशक्तिसम्पन्न ब्रह्मविष्णुशिवात्मक।
अखण्डज्ञाननिलय सायुज्यं देहि मे शिव।।१।।

हे शिव, आप जो साक्षात् ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्वरूप हैं, आप कल्पनातीत शक्ति से सम्पन्न हैं तथा आप अखण्ड ज्ञान के आगार हैं! आप मुझे मोक्ष प्रदान करें।

अप्पय्यकुलमार्ताण्ड अपराजितवैभव।
अशेषजीवसंसेव्य सायुज्यं देहि मे शिव।।२।।

हे शिव, आप जो अप्पय्य कुल के सूर्य हैं, आप जिनका वैभव अतुलनीय है तथा जो समस्त मानव-जाति के पूजनीय हैं, हे शिव! आप मुझे मोक्ष प्रदान करें।

आनन्दाख्यकुटीरस्थ आखण्डलनिषेवित।
आदिमध्यान्तरहित सायुज्यं देहि मे शिव।।३।।

हे शिव, आप जिन्होंने आनन्द कुटीर को अपना निवास-स्थान बनाया है, आप जो आदि, मध्य और अन्त से रहित हैं तथा जो इन्द्रदेव द्वारा भी पूजित हैं; हे शिव! आप मुझे मोक्ष प्रदान करें।

इष्टार्थदायिन् सर्वज्ञ इन्दुखण्डशिरोमणे।
इच्छामात्रजगत्सृष्टः सायुज्यं देहि मे शिव।।४।।

हे सकल वरदाता! हे सर्वज्ञ! हे चन्द्रशेखर! आप जो अपने संकल्प मात्र द्वारा सृष्टि की रचना करने वाले हैं, हे शिव, आप मुझे मोक्ष प्रदान करें।

ईषत्स्मितमुखोल्लास ईशित्वाद्यष्टसिद्धिद।
ईशान सर्वदेवेश सायुज्यं देहि मे शिव।।५।।

हे शिव, आप जो देवाधिदेव महादेव हैं, आप जो अष्ट सिद्धियों के प्रदाता हैं, जिनके मुख पर सदैव मुस्कान नृत्य करती रहती है, आप मुझे मोक्ष प्रदान करें।

ओंकाररूप विश्वेश ओंकारप्रतिपादित।
ओंकारध्वनिसन्तुष्ट सायुज्यं देहि मे शिव।।६।।

हे शिव, हे विश्वेश्वर, आप जो ओंकार स्वरूप हैं, ओंकार की ध्वनि से सन्तुष्ट होने वाले हैं तथा जिनका स्वरूप ओंकार द्वारा प्रतिपादित होता है, आप मुझे मोक्ष प्रदान करें।

कंजनेत्रारुणापांग कलिकल्मषभंजन।
कमलाननकारुण्य सायुज्यं देहि मे शिव।।७।।

हे शिव, आपके मुख-कमल पर किंचित् रक्ताभा लिये हुए उज्ज्वल कमल-नयन सुशोभित हैं। हे करुणासागर, हे कलिकल्मषनाशी शिव, आप मुझे पूर्ण मोक्ष प्रदान करें।

शिवानन्दमहादेव शिष्यकोटिसमन्वित।
शिष्टप्रिय महाशान्त सायुज्यं देहि मे शिव।।८।।

देवों के देव, महादेव शिवानन्द! आप उन कोटि-कोटि शिष्यों के परम प्रिय हैं, जिनसे आप घिरे रहते हैं। आप जो शुभता एवं प्रशान्तता की साकार प्रतिमा हैं, आप मुझे परम मोक्ष प्रदान करें।

दासभागवतानन्दकृतं स्तोत्राष्टकं शुभम्।
स्वीकृत्येदं शिवानन्द परमानुग्रहं कुरु।।९।।

हे प्रभु! आपके इस दास भागवतानन्द द्वारा आपकी प्रशंसा में रचे जाने वाले इस स्तोत्राष्टक को आप स्वीकार करें तथा आशीर्वादित करें। (अनु. श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

राजयोग २

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

स्वाध्याय से बुद्धि निर्मल होती है। निरन्तर अध्ययन से रजोगुण और तमोगुण निःसत्त्व हो जाते हैं। मन में सात्त्विकता आ विराजती है।

ईश्वर-प्रणिधान क्या है? परमात्मा के प्रति आत्म-निवेदन। अपना शरीर, मन, प्राण और अपनी आत्माह्नसभी परमात्मा के चरणों पर निछावर कर दें। अपने कर्मों को परमात्मा की पूजा समझ कर करें। मनमानी न करें। परमात्मा जो-कुछ आदेश दे रहे हों, उन्हीं का पालन करें। अपने को उनके ही हाथों का खिलौना समझें। इस प्रकार अपने को निरहंकारी, निरभिमानी और निःस्पृह बना कर आत्म-शान्ति का सेहरा बँधवा लें।

प्राणायाम

श्वास-प्रश्वास-क्रिया में सन्तुलन लाने की क्रिया का नाम प्राणायाम है। प्राण का स्थूल रूप श्वास है। इस पर विजय पाने से प्राण पर भी विजय पायी जा सकती है।

प्राण परमात्मा का महान् स्वरूप है। प्राण ही ईश्वर है। प्राण महान् तत्त्व है। गहरी नींद में जब आपकी इन्द्रियाँ और आपका मन सो जाता है, तब प्राण सतत जाग्रत रहता है।

प्राण में स्फुरण होता है, तभी मन और इन्द्रियाँ अपना-अपना व्यापार करती हैं। प्राण को शास्त्रों ने 'ज्येष्ठ और श्रेष्ठ' कह कर पुकारा है।

राजसिक प्रकृति की प्रबलता के कारण हमारे शरीर में प्राण असन्तुलित है। यदि आप प्राणायाम का अभ्यास करेंगे, तो इसमें साम्य का आविर्भाव होगा और प्राण की गति लयबद्ध हो जायेगी।

प्राणायाम का अभ्यास सभी प्रकार के रोगों का निवारण करता है। जिन रोगों को चिकित्सक असाध्य कह कर टाल देते हैं, उनको भी प्राणायाम के अभ्यास से ठीक किया जा सकता है। इसके अभ्यास से कुण्डलिनी-शक्ति जाग्रत होती है और शरीर स्वस्थ तथा दीर्घजीवी रहता है।

प्राणायाम का अभ्यास नियमपूर्वक करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। मिताहारी बनें। थोड़े ही समय में आप अद्भुत सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

पद्मासन अथवा सुखासन में बैठ जायें। बायें नासिकापुट से धीरे-धीरे श्वास अन्दर लें। यह क्रिया पूरक नाम से जानी जाती है। श्वास को अन्दर ही रोके रखें और मन में प्रणव का जप करते जायें। इसे कुम्भक कहते हैं। अब दाहिने नासिकापुट से धीरे-धीरे श्वास बाहर निकालें। यह क्रिया रेचक कहलाती है। इसी प्रकार पुनः दाहिने नासिकापुट से श्वास खींच कर कुछ देर रोकें और बायें नासिकापुट से निकाल दें। इस प्रक्रिया को ५ या ६ बार दोहरायें।

यह प्राणायाम-विज्ञान है। कर्मयोगी, भक्त और वेदान्ती भी प्राणायाम का अभ्यास कर सकते हैं। इसका अभ्यास मन को शान्त कर राजसिक और मानसिक अंश का पराभव कर देता है। प्राणायाम के अभ्यास से धारणा-शक्ति तीव्र होती है और कार्य में आशातीत सफलता मिलती है।

धारणा

किसी भी साकार वस्तु या बिन्दु या परमात्मा के रूप या गुण पर मन को एकाग्र करना धारणा है।

मन सदा घूमता रहता है। इसकी दौड़ विषय-पदार्थों की ओर होती है। यह सदा भोगानन्द की ही बातें सोचता रहता है। बन्दर की तरह एक विषय से दूसरे विषय पर कूद पड़ना ही इसका स्वभाव है।

वैराग्य और अभ्यास द्वारा मन को एकाग्र करने की साधना धारणा कहलाती है।

धारणा में सफलता एक-दो दिन में ही मिल जाये, ऐसा सम्भव नहीं है। एक सप्ताह ही नहीं, महीनों तक आपको धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी होगी। श्रद्धा और उत्साह के साथ दीर्घ काल तक धारणा का अभ्यास करते रहना होगा। यह बात याद रखने योग्य है कि ब्रह्मचर्य, वैराग्य और निरहंकारिता के अभाव में और तृष्णा से विराग हुए बिना धारणा में सफलता नहीं मिलती है। धारणा के अभ्यास में सफलता पाने के लिए यह आवश्यक होता है कि साधक यम और नियम का समुचित पालन करें।

आसन-जय करें। प्राणायाम के अभ्यास से श्वास और प्राण पर विजय पायें। इन्द्रियों को विषय-वासनाओं से हटा लें। तब आप धारणा में सत्वर सफलता पायेंगे। यदि आप धारणा के अभ्यास में पक्के बन जायें, तो ध्यान और समाधि का अवतरण स्वतः हो जायेगा।

धारणा का अभ्यास दो प्रकार से किया जाता है : एक तो स्थूल पदार्थों पर, दूसरा सूक्ष्म पदार्थों पर। नये साधक के लिए स्थूल पदार्थ पर ही धारणा का अभ्यास करना सरल है। अभ्यास दृढ़ हो जाने पर वह सौन्दर्य, पवित्रता, शान्ति, आनन्द, मोक्षादिक गुणों पर अपनी धारणा को स्थिर कर सकता है।

स्थूल पदार्थ पर धारणा का अभ्यास करने के लिए दीवार पर एक काला बिन्दु बना दें और एकटक उस बिन्दु को निहारते रहें। अथवा मोमबत्ती की लौ पर एकटक निहारें। तारों को एकटक निहारें। आराध्यदेव के चित्र की ओर एकटक निहारें। इसी प्रकार चन्द्रमा पर भी धारणा को स्थिर किया जा सकता है।

अभ्यास-काल में नियमित और नियमपूर्वक रहना चाहिए। यह नहीं कि एक दिन किया और दूसरे दिन न किया। नियत समय पर अभ्यास के लिए बैठ जायें। ऐसा भी नहीं करें कि एक दिन तो पाँच मिनट तक अभ्यास करें और दूसरे दिन आधे घण्टे तक। अपने आहार-विहार में युक्तियुक्त बनें। सात्त्विक और मिताहारी बनें। अपनी संगति का भी विशेष ध्यान रखें। बुरी संगति, भले ही अपनों की ही हो, तुरन्त त्याग दें। गुरु और भगवान् में अटल श्रद्धा रखें। आप सिद्धि प्राप्त करेंगे।

ध्यान

''ध्यानं निर्विषयं मनः'' ब्रह्मध्यान में मन विषय-विलासहीन हो जाता है। मन सदा परमात्मा में ही रमता रहता है।

यह सम्भव नहीं है कि आप सहसा ही कूद कर ध्यान अथवा समाधि के मैदान में पहुँच जायें। पहले निष्काम सेवा द्वारा अपने मन को पवित्र बना लें, भक्ति द्वारा अपने भावों को उच्च और विकसित कर लें, सदाचार और सद्विचारों का पालन करें, पूर्ण सदाचारपूर्वक जीवन बितायें; फिर ध्यान का अभ्यास पूर्ण होना असन्दिग्ध हो जायेगा।

धारणा के उपरान्त ध्यान का आरम्भ स्वतः हो जाता है। इसी प्रकार अनवरत ध्यान करते रहने पर समाधि का अवतरण होता है।

स्थूल प्रकृति वाले साधकों के लिए ध्यान का कोई-न-कोई अवलम्ब होना चाहिए। अतः आरम्भ में सगुण ध्यान करना चाहिए। राम, कृष्ण, देवी अथवा अपने आराध्यदेव या अपने गुरु के स्वरूप का ध्यान करें। जिस देवता की मूर्ति पर आप धारणा का अभ्यास कर रहे हैं, उसी देवता के स्वरूप का ध्यान करना चाहिए।

अब दिव्य गुणों पर ध्यान करना आरम्भ कर दें। सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, पूर्णता तथादिक गुणों के भावों पर ध्यान करें। यह निर्गुण ध्यान का मार्ग है। अब आप धीरे-धीरे निराकार पर ध्यान करना आरम्भ कर सकते हैं।

एक दिन या सप्ताह में या महीने में ही गम्भीर ध्यान हो सकता है, ऐसा न सोचें। प्रयत्न करते रहें, करते रहें, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करें। सदा सावधान और दत्त-चित्त रहें। वासना, तृष्णा और महत्त्वाकांक्षाओं को त्याग दें। तीव्र वैराग्य, तीव्र लगन और आत्म-ज्ञान की तीव्र अभिलाषा मन में जाग्रत करें। इस प्रकार आप धीरे-धीरे ध्यानाभ्यास में पूर्णता प्राप्त कर लेंगे।

प्रयत्न करें। जब तक सफल न हों, प्रयत्न करते ही रहें। ध्यान करें, ध्यानी बनें और ध्यानस्थ हो जायें। आप अवश्य ही सफल होंगे। ***(अनूदित)***

आपका शान्ति-दूत :

आत्म-संयम का अभ्यास

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

आत्म-संयम के अभ्यास के लिए कुछेक प्रक्रियाएँ हैं जो बहुत लाभदायक हैं; किन्तु उनमें प्रवेश करने से पहले एक प्रश्न है। यदि व्यक्ति आत्म-संयम और आत्म-सुसंस्कृति की यह प्रक्रिया प्रारम्भ करना चाहता है, तो उसे स्वयं अपने सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। उसे स्वयं से पूछना चाहिए, ''इस प्रारम्भ करने के समय मेरी स्थिति क्या है?'' जब व्यक्ति आत्म-निरीक्षण प्रारम्भ करता है तो उसकी खोज सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों ही तरह की हो सकती है। वास्तविकता तक जाया जाये तो आपका जो चित्र उभर कर सामने आता है, वह सम्भव है प्रशंसात्मक न हो। इस आत्म-निरीक्षण में आपका ऐसा रूप सामने आ सकता है जिसकी आपने अपने सम्बन्ध में कल्पना ही न की होगी। यह आत्म-निरीक्षण आपको यह जानने में सहायता करता है कि वास्तव में आप हैं क्याह्वह्वसकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टियों से। रोज दिन में कुछ समय के लिए एकान्त में शान्ति से आत्म-निरीक्षण करें, यह समय ऐसा होना चाहिए जब अन्य किसी ओर ध्यान न हो और आप अपने-आपको जाँच सकते हों। जब आपने ठीक तरह से खोज पूरी कर ली, तब आपके अपने विषय में स्पष्ट चित्र सामने आ जायेगाह्वह्वयह लगभग स्वयं को शीशे में देखने जैसा होगा।

यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या यह प्रक्रिया वांछनीय है; क्योंकि यदि बहुत से नकारात्मक गुण सामने आते हैं तो यह निराशापूर्ण स्थिति उत्पन्न कर देंगे। व्यक्ति सोचने लगेगा, ''अरे, मेरी स्थिति तो बहुत निराशाजनक है, यह सब करने का कुछ भी लाभ नहीं होगा, सब व्यर्थ जायेगा।'' किन्तु आपका आशय अतीत की गलतियों पर चिन्ता करना और दोषी भावना से ग्रसित हो जाना नहीं है। इस आत्म-विश्लेषण का उद्देश्य एक सकारात्मक पुनरारम्भ की प्रक्रिया शुरू करना है और इसका प्रयोजन पूर्णतया रचनात्मक एवं सकारात्मक है। एक बार जब स्पष्ट चित्र आपके सामने आ जाता है, तो वह आपका पथ-प्रदर्शक और निर्देशक बन जाता है। यह बता देता है कि आपमें क्या-क्या गुण हैं और क्या कमियाँ हैं, और अब आगे आपके सामने करने को काम क्या है। अब आपको नकारात्मक तत्त्वों के विषय में नहीं सोचना है। उन्हें अब भूल जायें और प्रकाश की ओर उन्मुख हो जायें।

यहाँ पर हमें मन के सम्बन्ध में एक सत्य का स्मरण कर लेना चाहिए। मन के नकारात्मक गुणों का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है। नकारात्मक वृत्तियाँ, जैसेह्वह्वबेईमानी, घृणा, दुर्भावना, स्वार्थपरता, निर्दयता इत्यादिह्वह्वये सब प्रवृत्तियाँ जो व्यक्ति को घृणास्पद बनाने वाली हैंह्वह्ववास्तव में अस्तित्व-विहीन हैं, ये हैं ही नहीं। ये तो केवल किन्हीं सकारात्मक तत्त्वों के अभाव को उस व्यक्ति में दर्शाती हैं। इन सब पर विजय पाने का सुनिश्चित एवं सफल रास्ता है अपने ध्यान को सकारात्मक गुणों की वृद्धि पर केन्द्रित कर लेना। जैसे ही वे विकसित हो जायेंगे, नकारात्मक वृत्तियाँ लुप्त हो जायेंगी। नकारात्मकता केवल वास्तविक दिखायी देती है; किन्तु सकारात्मकता के अभाव के कारण ही यह प्रतीत होती है।

उदाहरण के लिए निर्बलता, शक्ति का अभाव है। किन्तु यदि आप ऐसे उपाय करते हैं जो बल और शक्ति बढ़ाने वाले हैं, तो दुर्बलता लुप्त हो जाती है। आपने निर्बलता से युद्ध नहीं करना है, न ही आपने निर्बलता को हटाने के लिए कुछ करना है, आपने तो बस शक्ति को बढ़ाना है, निर्बलता अपने-आप

चली जायेगी। इसलिए नकारात्मक तत्त्वों की कोई शक्ति वास्तव में नहीं है। किसी बात का अज्ञान होना अपने-आपमें कोई महत्त्व नहीं रखता। आप जिस विषय में नहीं जानते हैं, उसे सीख लें, बस अज्ञान चला जायेगा। सभी नकारात्मक कहलाने वाले गुणों के सम्बन्ध में यही हैह्वह्ववे केवल सकारात्मक गुणों के अभाव को दर्शाते हैं।

अतः जब आप रूपरेखा तैयार करते हैं और गम्भीर नकारात्मक तत्त्वों को देखते हैं तो चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। यह मानचित्र तो केवल आपको यह निर्देशित करने के लिए है कि आपने किन-किन गुणों को बढ़ाना है। जैसे ही आपने अपना स्पष्ट चित्र देख लिया, बस उसी क्षण से नकारात्मक की उपेक्षा कर दें और उदात्त गुणों को बढ़ाने की ओर मन एकाग्र कर दें, बस सब-कुछ अपने-आप ठीक हो जायेगा। आप उज्ज्वल सकारात्मक गुणों के भण्डार हैं; क्योंकि वास्तव में आप उस परम चैतन्य के अंश हैं, जो दिव्य है, परिपूर्ण है। परम परिपूर्णता भगवान् का स्वरूप है और आप उस सर्वोच्च परम परिपूर्ण के अंश हैं। सामान्यतया सुप्त अथवा अव्यक्त अवस्था में होते हुए भी यह परिपूर्णता आपमें पूर्णरूपेण विद्यमान है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो आप प्राप्त नहीं कर सकते; क्योंकि आप अनन्त सौन्दर्य, भलाई और शुभता के भण्डार हैं। आपने तो केवल अपनी दृष्टि को अन्तर्मुखी करना है और जो आपके भीतर आपका वास्तविक स्वरूप हो कर निवास करता है, उस परिपूर्णता में स्थित हो जायें। दिन-प्रति-दिन उसी पर ध्यान करें तथा सकारात्मक आकांक्षा द्वारा इसका आह्वान करते जायें। जितना अधिक आप इस आकांक्षा को बढ़ाते जायेंगे, उतना अधिक यह स्वयं को अभिव्यक्त करने लगेगी, ''मुझे निश्चित रूप से परिपूर्ण बनना है। मैंने निश्चित रूप से अन्तर्मन से जागरूक होना है और जो मैं वास्तव में हूँ, वही बनना है और स्वयं से साक्षात्कार करना है।'' यदि यह आकांक्षा दृढ़ है, तो फिर इस विश्व में कोई नहीं है जो आपको आपका मनचाहा प्राप्त होने से रोक सके। आप जो वास्तव में हैं ही, वह हो जाना सबसे अधिक सहज वस्तु है।

अधिकांश लोगों में यह जागरूकता प्रसुप्त अवस्था में पड़ी है; क्योंकि उनका पूरा ध्यान बाह्य जगत् की ओर ही हैह्वह्ववस्तु-पदार्थों, लोगों और तुच्छ संवेदनाओं की ओर ही है। मन पूरी तरह से बिखरा हुआ है और इसका ध्यान पूर्णतया गलत दिशा की ओर मुड़ा हुआ है। यदि मन की उसी शक्ति को अब निर्देशित करके भीतर की ओर, अपने वास्तविक स्वरूप की ओर गहन आकांक्षा एवं दृढ़ निश्चय से एकाग्र कर दिया जाये, तब संसार की कोई भी शक्ति आपको अपने दिव्य सौभाग्य से वंचित नहीं कर सकती। इसी में यह दावा निहित है कि 'कोई भी नकारात्मक तत्त्व कभी भी आपको आपके वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करने से रोक नहीं सकता।'' इस महान् कथन का यही महत्त्व है, ''सत्य आपको मुक्त कर देगा।'' और वह सत्य है आपके भीतर निहित आपका परमात्म-स्वरूप।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

अनुशासन और प्रशिक्षण की आवश्यकता

अनुशासन और प्रशिक्षण के द्वारा आप सर्वाधिक सेवा स्वयं अपनी ही करते हैं तथा स्वयं अपनी ही प्रसन्नता एवं भलाई का मार्ग प्रशस्त करते हैं; किन्तु यदि आपने ऐसे प्रशिक्षण की आवश्यकता को नहीं समझा है, तो आप स्वयं ही अपने शत्रु हैं। आप देखेंगे कि आप अपने जीवन में स्वयं जितनी हानि करते हैं, उसका दशवाँ अंश भी कोई दूसरा आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। **स्वामी चिदानन्द**

स्वामी शिवानन्द का अवतरण : एक प्रयोजन २

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जैसे महान् गुरुजनों का आगमन वस्तुतः प्रकृति से ही आत्मा की शक्ति का स्व-चेतना में उत्थान है। महान् ऋषि-मुनि भौतिक शरीर नहीं हैं, वे साकार द्रव्य नहीं हैं। जब हम ऋषि-मुनि, अवतार अथवा प्रतिभाशाली व्यक्तियों की आराधना करते हैं तो हम उनके साकार रूपों की आराधना नहीं करते, वरन् उनके आत्म-तत्त्व की, जो उन्हें जीवित रखता है, उनकी उच्चाकांक्षाओं की तीव्रता की, जो उन्हें उत्साहित करती है, उसकी आराधना करते हैं। हम भली-भाँति जानते हैं कि गुरुदेव स्वामी शिवानन्द में हम किसकी आराधना करते हैं। यह कोई छह फुट लम्बा रक्त, मांस और अस्थियों से निर्मित आकार नहीं है जो आराधना का विषय है अथवा मूल्यों की प्रशंसा है। 'मूल्य' शब्द को स्पष्ट करना है, विभासित करना है। एक अर्थ, एक महत्त्व, एक आकांक्षा, एक ज्ञान की ज्योति, एक ज्ञान-दीपह्वह्वसंक्षेप में, एक आत्मा गुरुदेव के स्वरूप में इस समय हमारी दृष्टि के पीछे निहित है।

आध्यात्मिकता का सर्वोच्च ज्ञान ही श्री गुरुदेव का सन्देश था। प्रकृति के प्राणहीन होते तत्त्वों और विच्छेदित गतिविधियों के पीछे एक मूल्य का, कभी विराम न लेने वाली व्यापकता का, नित्यता का और निरन्तरता का साम्राज्य है। एक अज्ञात तत्त्व संसार के सब ज्ञात तत्त्वों में व्यापक रूप से आच्छादित है। शाश्वत मूल्य का यह एक अज्ञात रहस्य मानो लोगों के हृदयों में एक अन्तहीन जिज्ञासा का दीप जलाये हुए है। यह एक शाश्वत प्यास है जो सृष्टि के प्रत्येक सृजित रूप को प्रेरित करती सी आभासित हो रही है और साथ ही किसी भी सांसारिक वस्तु से, किसी भी काल में सन्तोष की सम्भावना का भी निषेध करती है। कोई व्यक्ति सम्पूर्ण धरा का भी स्वामी क्यों न हो जाये अथवा समस्त जगत् का सम्राट् भी क्यों न हो जाये, उसे सन्तोष कदापि नहीं होता। कोई विलक्षण मायावी शक्ति विश्व की प्रत्येक वस्तु से असन्तुष्ट रहने के लिए हमें विवश करती है। उसकी ही प्रेरणा से जीवन की कभी समाप्त न होने वाली नित्यता प्राप्त करने के लिए हमारे भीतर सतत प्रार्थना चलती रहती है। सर्वस्व बनने और सर्वस्व प्राप्ति हेतु आभ्यन्तर से ही दबाव बना रहता है। और भी, यदि सम्भव होह्वह्वकिसी भी प्रकार से हम किसी सीमा में बँधना नहीं चाहते, हम प्रत्येक समीमता को भस्मीभूत कर देना चाहते हैं चाहे वह भौतिक हो, राजनैतिक हो, सामाजिक हो अथवा अन्य कोई और सीमा हो। विश्व की समस्त वस्तुओं पर एकाधिकार प्राप्त करके सबके अधीश्वर बन कर रहनाह्वह्वयही आकांक्षा है, मनोकामना है, सबके अन्तर्मन कीह्वह्वऔर यही है सृष्टि की रचना की विवेचना।

श्री गुरुदेव का जगत् में अवतरण अथवा अन्य किसी महान् आत्मा के इस धरा पर आगमन का प्रयोजन मानवता की सुषुप्त आत्मा को जागृत करना है। भौतिक सुखों के स्रोतों के साथ अनन्य रूप हो कर मानवता इन्हीं सुखों का आलिंगन करके सन्तोष की गहन निद्रा के आधीन हो चुकी थी। जीवन से इतर भावों को महत्त्व मिलने लगा और वस्तुओं का 'आत्म-तत्त्व' धीरे-धीरे आत्म-हनन के बिन्दु की मर्यादा का उल्लंघन करने लगा। भौतिकवादी सभ्यता के रूप में मृत्यु ने धरा पर अपना आवरण डालना प्रारम्भ कर दिया।

सृष्टिकर्ता ईश्वर ने, जिससे सब पदार्थों का उद्भव होता है, जो सभी इच्छाओं का, मनोकामनाओं का स्रोत है, जो जीवन का अर्थ है, मानो इसे झकझोर कर रख दिया और इसे पुनः चेतना प्रदान की। जैसा कि हमें ज्ञात है कि जब कोई वस्तु अपनी चरम सीमा तक पहुँचती है तो इसकी दूसरी चरम सीमा भी क्रियाशील हो उठती है। आप यदि सर्वस्व प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं तो आपको सर्वस्व खोना पड़ेगा। इसी प्रकार से चरम क्रियाएँ (extremes acts) विश्व में अपना कार्य

करती हैं। सर्वस्व खोने पर ही सर्वस्व की प्राप्ति होती है। जब आप इस संसार में 'कुछ नहीं' (nobody) हैं, तभी आप 'प्रत्येक व्यक्ति' (everybody) भी बन जायेंगे। जब आपको कोई नहीं चाहता, आप देखेंगे कि एक-न-एक दिन प्रत्येक व्यक्ति को आपकी चाह होने लगेगी। सर्वस्व जाने पर सर्वस्व का आगमन होता है।

इसी प्रकार से प्रकृति की अधिभौतिक गति की प्रक्रिया के द्वारा, जब प्रकृति अपने आभ्यन्तर को त्याग कर केवल बाह्यता की ओर समग्रता से प्रवृत्त हुईह्नह्नअधिभौतिक गति ने इस दिशा में इसकी गति को आगे बढ़ाया, तभी अकस्मात् अस्तित्व की स्थिरता बनाये रखने के लिए सन्तुलन का झुकाव दूसरी दिशा में हो गया। हम निःशंक भाव से यह कह सकते हैं कि इस शताब्दी के प्रारम्भिक काल में पूर्व, पश्चिम में तथा सर्वत्र जीवन के उच्चतर मूल्यों के पुनरुत्थान के लिए विश्व-व्यापी आन्दोलन छिड़ा। मूल्यों का महत्त्व बढ़ने लगा और प्रकृति की अपेक्षा प्रकृति-विषयक व्याख्याएँ अधिक महत्त्वपूर्ण हो गयीं। पूर्व-अर्जित ज्ञान की अपेक्षा वैज्ञानिक का मूल्य अधिक था। गणित का भौतिक विज्ञान पर अधिकार हो गया अर्थात् मन ने भौतिक वस्तुओं पर शासन करना प्रारम्भ कर दिया। जीवन तत्त्व की विषयपरकता (subjectivity) गौरवान्वित होने लगी। इन्द्रिय-विषयों का महत्त्व कम होने लगा और सार्वभौमिक सत्ता समस्त विलक्षण वस्तुओं और व्यक्तियों के सूक्ष्म द्वारों से सूक्ष्म वीक्षण करने लगी। ऐसा प्रतीत हुआ मानो ईश्वर को ही अपनी सृष्टि में चेतन स्वरूप में गति करने की आवश्यकता का आभास हुआ और आध्यात्मिकता का पदन्यास हुआ, उसे आना ही था; क्योंकि आध्यात्मिकता ही शासन है, व्यवस्था है और जीवन का मूल तत्त्व है।

गुरुदेव स्वामी शिवानन्द आध्यात्मिकता के इस महान् तत्त्व को स्पष्ट करते हुए कहते हैंह्नह्नसृष्टि का कार्य-कलाप इसी नियम के अन्तर्गत हो रहा है। संसार में जीवन की विधा, श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया, रहना, कार्य करना, नित्य कर्मों का अनुष्ठान करना, हमारी चेष्टाएँ, हमारे कार्य और इस जगत् में हमारी प्रत्येक गतिविधि सर्वशक्तिमान् परमात्मा की नियमित अर्चना-वन्दना के रूप में होनी चाहिए। एवंविध, संसार हमारे समक्ष परमात्मा की साक्षात् अभिव्यक्ति हो जाता है और हमारी दैनिक क्रियाएँ समस्त प्राणियों में विराजमान उस महान् सृष्टिकर्ता के लिए पावन आलोक को विकीर्ण करने वाली हो जाती हैं। आभास होने लगता है मानो विश्व की समस्त आँखों से वही अवलोकन कर रहा है, वही सब शिरों से संकेत कर रहा है और समस्त हाथों से कार्य कर रहा हैह्नह्नसहस्रशीर्षा पुरुषः। पुरुषसूक्त का यह महान् सन्देश गुरुदेव स्वामी शिवानन्द का अन्तिम सन्देश था। वे इस संसार में वेदों, उपनिषदों तथा भगवद्गीता के ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए आये जो स्पष्ट रूप से मनुष्य की सुदूरतम बोधगम्यता का प्रमाण है और जिसे उसने सृष्टि के निम्नतर स्तर से, धीमी गति से ऊर्ध्वगमन करते हुए मनुष्य की अवस्था में आ कर प्राप्त किया जहाँ यह सन्तुष्ट नहीं था। मानवता, अतिमानवता अथवा देवत्व की सम्भावना को प्रत्यक्ष करने के लिए निर्देशक बन गयी। निम्नतर प्रजातियों से उदित हो कर जीवन, सृष्टि के उच्चतर वर्ग में मानव प्रकृति के रूप में विकसित हुआ। मानवीय स्तर तक पहुँच कर ही मनुष्य एक ऐसे भविष्य को साक्षात् देखने लगा जो अपने परिमाण में और अधिक व्यापक और विस्तृत है। इसी मानवता के स्तर तक विकसित हो कर ही मनुष्य देवत्व की विद्यमानता के स्पष्ट दर्शन कर सकता था।

गुरुदेव स्वामी शिवानन्द अनन्त, अविरत, शाश्वत मानवीय आकांक्षा की पराकाष्ठा के अवतार थे। उनका उपदेश इन सारगर्भित शब्दों में निहित हैह्नह्न''ईश्वर प्रथम, पश्चात् संसार, अन्त में आप'' (God first, world next, yourself last)। यह कथन, यह लघु सन्देश, यह एक वाक्य का उपदेश कदाचित् जीवन की महान् शिक्षा का सारांश है जो ईश्वर को धरती पर, हमारे रसोईघर, हमारे वास स्थान, हमारे भौतिक व्यक्तित्व में ले आता है और सृष्टि के भौतिकत्व को देदीप्यमान देवत्व में रूपान्तरित कर देता है जिसके द्वारा हम जीवन यापन करते हैं, गति करते हैं और जिसके कारण से ही हमारा अस्तित्व है।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

मानव से ईश-मानव :

मालाया में कुप्पुस्वामि का जीवन-१

श्री एन. अनन्तनारायणन्

मलाया में कुप्पुस्वामि का जीवन एक पुरुषोचित जीवनह्वकर्मठ एवं परिश्रमी जीवन था। वे कभी एक पल भी व्यर्थ नहीं गँवाते थे। वे अपने मित्रों को दूर से ही 'नमस्कार' कह दिया करते; किन्तु यदि कोई मित्र उन्हें गप्पबाजी में उलझाने का प्रयत्न करता तो वे फिर से 'नमस्कार' कर देते, जिसका अर्थ इस बार होता थाह्वह्व''अच्छा जी, अब मैं चलता हूँ।''

जोहोर मेडिकल ऑफिस के काम के साथ-साथ कुप्पुस्वामि प्रायः अपने उन यूरोपीय अधिकारियों के निजी कार्य कर दिया करते थे जिन्हें उन पर पूर्ण विश्वास था; इसीलिए वे अपने सभी तरह के उत्तरदायित्वपूर्ण कामों के लिए इन्हीं पर निर्भर करते थे। वे केवल इन अधिकारियों के ही नहीं; अपितु जिसे भी सहायता की आवश्यकता होती, उसकी सेवा कर दिया करते; और केवल डाक्टरी सहायता नहीं, बल्कि किसी भी प्रकार की सेवा को वे तत्पर रहते थे। लोगों की सहायता वह किस सीमा तक करते थे, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि एक बार अपने किसी मित्र के लिए कुछ लाने के लिए उन्होंने अपनी निजी बहुमूल्य वस्तुएँ भी गिरवी रख दी थीं।

खेलकूद में उन्हें रुचि थी। साइकिल चलाना उन्हें सबसे अधिक प्रिय था। उन्होंने पश्चिमी खेलों से सम्बन्धित बहुत-सी पुस्तकें पढ़ी थीं और बहुत-सी खेल-प्रतियोगिताओं में वे उपस्थित रहे थे। थोड़े समय के लिए वह 'दी मलाया ट्रिव्यून' में खेल संवाददाता भी रहे थे।

उन्हें उत्कृष्ट पोशाक पहनना अच्छा लगता था। उनके पास दर्जनों सूट थे। उनकी अल्मारी रेशमी वस्त्रों से भरी रहती थी; किन्तु वे उन सबको अत्यन्त उपेक्षा से पहनते थे। सिल्क के वस्त्रों को जिस सँभाल की आवश्यकता रहती है, ऐसे कभी भी वह ध्यानपूर्वक सँभाल कर वस्त्रों को नहीं रखते थे, बल्कि यों ही इधर-उधर रख दिया करते मानो वे चीथड़े मात्र हों।

उनके पास ऐलवुड तथा और भी बहुत तरह की टोपियाँ (हैट) थीं; किन्तु कभी भी उन्हें पहनते नहीं थे। पगड़ी बाँधने का उनका अपना ही विलक्षण ढंग था, कई बार वह फैल्ट-कैप पहनते और कई बार राजपूत राजकुमार की तरह सिल्क की पगड़ी पहन लेते थे। उन्हें आभूषणों तथा सोने, चाँदी और चन्दन की विशिष्ट वस्तुओं में बहुत रुचि थी। वह तरह-तरह की अँगूठियाँ और हार खरीद लिया करते थे। दशों उँगलियों के लिए उनके पास कम-से-कम दश अँगूठियाँ रहती थीं। किसी दिन वह उन सभी को पहन कर घूमने चले जाते और फिर आगामी दिन ही सभी को उतार कर सन्दूक में बन्द कर देते, जिन्हें फिर कभी याद ही नहीं करते थे।

इन सब रुचियों के होते हुए भी कुप्पुस्वामि में सांसारिक सुखों की ओर जरा-सी भी रुचि नहीं दिखायी दी। उन दिनों, मलाया में, विशेष रूप से भारत से गये लोगों में से कोई भी ऐसा नहीं था जो सुरा, सुन्दरी और तम्बाकू जैसे व्यसनों से बचा हुआ हो। सारे-के-सारे मलाया संघबद्ध राज्य में कुप्पुस्वामि ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें इन सबसे अछूते रहने का श्रेय प्राप्त था। कामवासना से वह पूरी तरह अनजान थे। सिगरेट, तम्बाकू और मद्यपान उन्होंने कभी नहीं

किया। तम्बाकू से तो उन्हें इतनी घृणा थी कि उनके एक मित्र, जिसे यह व्यसन था, का नाम ही उन्होंने 'श्रीमान् तम्बाकू' रख दिया था।

वह यदि किसी दुकान पर जाते, तो चीजों का चुनाव करने में जरा भी समय नष्ट नहीं करते थे, जो भी सामान लेना होता, तुरन्त ले लेते, मोल-भाव करना उनके स्वभाव में नहीं था, बिना जाँच-पड़ताल किये बिल का भुगतान तुरन्त कर दिया करते थे। उनके इस स्वभाव का विरोध करते हुए एक बार उनके एक मित्र ने कहा कि उन्हें ऐसे नहीं करना चाहिए; क्योंकि दुकानदारों का स्वभाव अधिक मूल्य बताने का होता है। इसके उत्तर में कुप्पुस्वामि ने कहा, ''इससे क्या अन्तर पड़ता है? मैं मोल-भाव नहीं कर सकता। वह एक निर्धन व्यक्ति है, कुछ सैंट उसने अधिक ले लिये तो क्या हुआ। एक बार उसे मेरा स्वभाव मालूम हो जायेगा तो फिर वह अधिक मूल्य बताना बन्द कर देगा।''

कुप्पुस्वामि दूसरों की बात सदैव सच मानते थे। उन्हें लोगों पर विश्वास था। एक बार उन्होंने गाड़ी खरीदनी चाही, उनके पास धन था; किन्तु एक व्यक्ति ने तभी उनसे उधार पैसे माँग लिये और फिर पैसे ले कर चुप्पी साध ली। डाक्टर ने धन गँवाने पर केवल इनता ही कहा, ''भगवान् की शायद यही इच्छा थी।''

कुप्पुस्वामि प्रायः दार्शनिक साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तकों की दुकान पर जाया करते थे। पुस्तकें खरीदने का उनका ढंग विलक्षण ही था। जो पुस्तकें उनके पास होती थीं, उनकी सूची पुस्तक-विक्रेता को पकड़ाते हुए कह देते, ''यह पुस्तकें मेरे पास हैं, इनके सिवा अन्य जो भी योग और वेदान्त सम्बन्धी पुस्तकें आपके पास हों, कृपया वह मुझे भिजवा दें।'' इस तरह नयी-से-नयी आध्यात्मिक पुस्तकें उनके निजी पुस्तकालय में पहुँच जाती थीं।

इसी समय से कुप्पुस्वामि के मन में मात्र सांसारिक उपलब्धियों से अलग कुछ अन्य विशेष वस्तु प्राप्त करने की इच्छा छिपी हुई थी, और यह अन्तरनिहित इच्छा भजन, नाम-संकीर्तन, जप और सेवा के रूप में उमड़ कर प्रस्फुटित होती थी। कुप्पुस्वामि का जप में अत्यधिक विश्वास था। वह जप-मालाएँ खरीद लेते थे और जप में रुचि रखने वालों को निःशुल्क बाँट दिया करते थे। प्रायः वे मित्रों और पड़ोसियों को भजन-कीर्तन मण्डलियों में आमन्त्रित कर लेते थे और ऐसे अवसरों पर अपने 'भाषण-गीतों' के माध्यम से नन्दनार, रामदास और तुलसीदास इत्यादि जैसे सन्त कवियों की जीवनियाँ सुनाया करते थे।

एक दिन डाक्टर कुप्पुस्वामि के मित्र ज्यों-ही उनके आँगन में प्रविष्ट हुए, उन्हें घर के भीतर से बच्चों की प्रसन्नता से हँसने की आवाजें सुनायी दीं। वे सब भीतर गये, तो क्या देखा कि डाक्टर मंच के पीछे के 'अभिनय-संचालक' बने हुए थे! सात-आठ बच्चों ने उन्हें घेर रखा था और कुप्पुस्वामि राम, सीता, हनुमान् तथा अन्य पात्रों को सजाने-सँवारने में व्यस्त थे। वह धार्मिक नाटक की तैयारी कर रहे थे। इधर किसी के मूँछें लगाते, तो उधर किसी को साड़ी पहनाते। दाहिनी ओर घूम कर राम को संवाद सिखाते, तो बायीं ओर मुड़ कर सीता को गीत सिखाने लगते!

डाक्टर सदा प्रसन्न रहते थे तथा उनका स्वभाव अत्यन्त मधुर था, सभी बहुत शीघ्र उनकी ओर आकर्षित हो जाते थे। उत्सव-त्योहारों में वे सब ओर सद्भावना और प्रसन्नता भर देते। वह सदा सबको प्रसन्न देखना चाहते थे और इसी प्रयत्न में कभी हँसाने वाला गीत गाने लगते, तो कभी कोई वाद्य संगीत बजाने लगते और कभी हास्यपूर्ण चुटकुले सुनाया करते थे।

उनके कुछ मित्र दम्भी स्वभाव के थे, वे उन्हें विवाह अथवा चाय पार्टियों में बुलाने से कतराते थे; क्योंकि वह भली-भाँति जानते थे कि डाक्टर समय से एक दो घण्टे पहले ही पहुँच जायेंगे और दिव्य नाम-संकीर्तन आरम्भ कर देंगे! किन्तु कुप्पुस्वामि के तो अपने निराले ही ढंग थे। जब वह देखते कि किसी घनिष्ठ मित्र का निमन्त्रण-पत्र नहीं पहुँचा है, तो वे सीधे उस मित्र के घर पहुँच जाते और कहते, ''क्या तुम मुझे बुलाना भूल गये? चलो, कोई बात नहीं। तुम मेरे मित्र हो, तुम्हारे बच्चे के जन्म-दिवस के उत्सव में मुझे तो आना ही है न!'' और वह अपनी राजसी-निर्भीकता सहित राम-राम नामावली गाना आरम्भ कर देते। कोई अनुमति, किसी परिचय और किसी तरह की औपचारिकता नहीं! उनकी भगवद्भक्ति इतनी गहन, भगवद्महिमा-गान की इच्छा इतनी तीव्र तथा भगवन्नाम-प्रचार की लगन इतनी सुदृढ़ थी कि उसने औपचारिकता और परिपाटियों के सभी बन्धन तोड़ दिये थे।

कुप्पुस्वामि ने कभी किसी को कठोर शब्द तक नहीं कहा; और यदि कभी कहा भी तो किसी ने उसका बुरा नहीं मनाया, ''अच्छा, कुप्पुस्वामि ने ऐसे कहा?'' वे हैरान से हो कर कहते, ''कोई बात नहीं, उनका आशय हमें ठेस पहुँचाने का कतई नहीं रहा होगा।'' वह सदा प्रसन्नता से ओत-प्रोत रहते। सभी से मुस्कराते हुए बात करते, प्रत्येक से सहानुभूति एवं प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते। सड़क पर यदि कोई कुली भी मिल जाता, तो थोड़ी देर रुक कर उससे बात करते, फिर आगे निकल जाते। उनके कुछ अधिक दम्भी मित्र उनके इस स्वभाव की आलोचना करते थे; किन्तु वे इसकी परवाह नहीं करते थे और कह दिया करते थे, ''जब मैं उनके साथ समान भाव से बातचीत करता हूँ तो उन्हें कितनी प्रसन्नता होती है, इसकी तो कल्पना करें! यह प्रसन्नता उन्हें देने में मेरा क्या जाता है? और फिर इससे मुझे भी तो सुख ही मिलता है!''

बहुत समय तक तो कुप्पुस्वामि अपना भोजन स्वयं ही बनाते रहे। फिर उन्होंने एक रसोइये का प्रबन्ध कर लिया। उसका नाम नरसिंह अय्यर था। पहली ही रात को दयालु डाक्टर ने इस नये साथी को आश्चर्यचकित कर दिया। अपना बिस्तर धरती पर बिछाते हुए, चारपाई की ओर संकेत करके उसे कहा, ''इस इलाके में धरती पर सोना सुरक्षित नहीं है। मुझे तो इसका स्वभाव हो गया है, लेकिन तुम्हें खतरा मोल नहीं लेना चाहिए।'' और आगामी सुबह जैसे ही कॉफ़ी बन कर तैयार हुई डाक्टर ने रसोइये के लिए स्वयं उसके कप में कॉफ़ी डाल कर बलात् उसे अपने साथ बैठ कर कॉफी पीने को बाध्य कर दिया। दोपहर के भोजन के समय भी उसे अपने साथ बगल में बैठा कर अपने साथ-साथ भोजन करने को कहा, और जब वह भोजन कर रहे थे तब भी स्वयं अपने हाथ से उसकी प्लेट में खुली मात्रा में घी और दही परोस दिया।

रसोइए को २५ डालर मासिक वेतन पर नियुक्त किया था; किन्तु माह के अन्त में डाक्टर ने रसोईघर में प्रवेश करते हुए उसे एक लिफाफा थमाया, जिसमें ३५ डालर थे और कहा, ''दीक्षितार, यह मेरी प्रेम-भेंट है। क्या यह तुम्हारे लिए पर्याप्त है?'' बेचारा अय्यर कृतज्ञ भावना से भर गया।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

जीवन का अन्तिम लक्ष्य : परमात्मा में विलीन हो जाना

जब सरोवर का जल सूख जाता है, तब जल के अन्दर रहने वाला सूर्य का प्रतिबिम्ब सूर्य में जा मिलता है। इसी भाँति जब ध्यान-धारणा के द्वारा मन विलीन हो जाता है, तब यह जीवात्मा स्वयं परमात्मा में विलीन हो जाता है और यही जीवन का अन्तिम लक्ष्य भी है। **स्वामी शिवानन्द**

बाल-स्तम्भ :

आयी होली आयी ३

स्वामी रामराज्यम्

एक वर्ष होली में श्यामसुन्दर ने गोपी प्रभावती की दुर्गति कर डाली थी। प्रभावती भी चूकने वाली नहीं थी। अगले वर्ष होली के दिन वह अपनी गगरी में सूखा रंग डाल कर यमुना-तट पर पहुँची। उसने गगरी में पानी भरा। रंगीन पानी दिखायी न पड़ जाये, इसलिए गगरी का मुँह ढक दिया। यमुना के निकट वन-प्रान्त में बाँसुरी बजाते हुए श्यामसुन्दर को पुकार कर वह बोली ''नेक गगरी उठवा दे आ कर।'' श्यामसुन्दर आये और गगरी उठाने के लिए झुके। तभी प्रभावती ने श्यामसुन्दर पर गगरी उलट दी। रंग-स्नान करके श्यामसुन्दर भाग खड़े हुए। फिर प्रभावती ने श्यामसुन्दर को दोबारा छकाने की एक योजना बनायी।

किशोरी जी रंग तैयार करने के लिए टेसू के फूल तोड़ने के बहाने बरसाना से वृन्दावन जाने के लिए निकलीं। विशाखा, ललिता आदि सखियाँ भी पीछे-पीछे चलीं। प्रभावती भी उनके साथ हो ली। होली खेलने के लिए मदनसुखदा कुंज में मिलना है किशोरी जी को श्यामसुन्दर से, यह सूचना मधुमंगल से पूछ कर इन्दुप्रभा ने सखियों को दे दी थी। माधवी उस कुंज के निकट एक सघन उपवन में रंग के पात्र, पिचकारी और कुछ अन्य सामान छिपा कर रख आयी थी।

प्रभावती ने विशाखा से फुसफुसा कर पूछाह्न ''सारा प्रबन्ध कर लिया है न?''

विशाखा ने कहाह्न ''तुम्हें ठीक-ठीक पता है न कि सुबल आज ग्वाल-बालों की टोली में श्यामसुन्दर के साथ नहीं होगा?''

''हाँ, इन दिनों वह यहाँ नहीं है। होली के बाद लौटेगा।''

''फिर तुम चिन्ता न करो। सब कुछ हो जायेगाह्न'' विशाखा ने कहा।

''और किशोरी जी को सारी बातें बता दी हैं?'' प्रभावती ने पूछा।

''तुम सब मेरे ऊपर छोड़ दो।''

''ठीक है, ठीक हैह्न'' प्रभावती ने कहा।

सखियाँ आगे बढ़ीं। वे मदनसुखदा कुंज के निकट के उसी सघन उपवन में घुस गयीं।

तुंगविद्या को सामने बिठा कर सखियाँ उसके केश सँवारने लगीं। उसके सिर पर पगड़ी बाँध दी। फिर उसे बंडी और धोती पहना दी। इसके बाद एक झुरमुट के पास ले जा कर उसे एक वृक्ष के तने से सटा कर खड़ा कर दिया। फिर उसके दोनों हाथ पीछे करके चूनरी से बाँध दिये। उन्होंने तुंगविद्या को संकेत किया। तुंगविद्या अपना स्वर बदलने का प्रयास करते हुए चिल्लायीह्न ''कन्हैया, कन्हैया जल्दी आओ।''

इधर मदनसुखदा कुंज में सखाओं के साथ बैठे और किशोरी जी की प्रतीक्षा करते हुए श्यामसुन्दर मधुमंगल से रंग तैयार करने के लिए कह रहे थे।

मधुमंगल ने आश्चर्य से कहाह्न ''कन्हैया, यह कौन पुकार रहा है तुम्हें?''

श्यामसुन्दर और सारे सखा भागे उस उपवन की ओर, जिधर से आवाज आयी थी।

तभी एक सखी का स्वर उपवन के अन्दर से आता हुआ सुनायी पड़ाह्न ''श्यामसुन्दर जहाँ हो, वहीं रुक जाओ।''

श्यामसुन्दर और सखागण तुरन्त रुक गये।

फिर एक दूसरा स्वर सुनायी पड़ाह्न ''किशोरी जी ने सुबल को बन्दी बना लिया है।''

''सखी, झूठ मत बोलो। वह तो अपने मामा के घर गया हैह्न'' श्यामसुन्दर ने चिल्ला कर कहा।

''नहीं, वह आज सबेरे वापस आ गया। तुम्हें ढूँढ़ता हुआ हम लोगों के पास आया था। किशोरी जी कहती हैं कि अकेले तुम आओ, तो उसे ले जा सकते होह्न'' वही स्वर सुनायी पड़ा।

श्यामसुन्दर ने सखाओं को रुकने का संकेत दिया और आगे बढ़े।

तभी एक तीसरा स्वर सुनायी पड़ाह्वह्व''रुको श्यामसुन्दर। कुछ बातें मानने का वचन देना होगा तुम्हें। पहले वचन दो, तब इधर आओ।''

श्यामसुन्दर ने रुक कर कहाह्वह्व''सुबल को वापस कर दो; जो कहोगी, वह करूँगा।''

''वचन दो कि होली में उत्पात नहीं किया करोगे।''

''वचन देता हूँ।''

''दही का दान तो नहीं माँगा करोगे?''

''अब नहीं मागूँगा।''

''मटकियाँ तो नहीं फोड़ोगे?''

''नहीं फोडूँगा।''

कुछ देर तक चुप्पी छायी रही। फिर वही स्वर सुनायी पड़ाह्वह्व''ठीक है। अकेले आ कर सुबल को ले जाओ।''

श्यामसुन्दर आगे बढ़े।

उपवन के बाहरी छोर पर किशोरी जी की दासी मिली। उसने उपवन के अन्दर एक वृक्ष की ओर संकेत किया और चली गयी।

उस सघन उपवन में सूर्य का प्रकाश बहुत कम था। श्यामसुन्दर ने ध्यान से देखाह्वह्वएक वृक्ष के तने से सटा हुआ खड़ा किसी का शरीर दिखलायी पड़ रहा था। पीठ पर बंडी पड़ी थी, घुटनों-घुटनों तक धोती थी। सिर पर पगड़ी बँधी थी। दोनों हाथ पीछे करके बाँध दिये गये थे।

श्यामसुन्दर सोचने लगेह्वह्ववह सुबल ही होगा। वह भी इसी तरह बंडी और घुटनों तक ऊँची धोती पहनता है और पगड़ी बाँधता है।

तभी एक दूसरा स्वर सुनायी पड़ाह्वह्व''इसी सुबल ने पिछले साल होली में सबसे अधिक ऊधम मचायी थी। किशोरी जी ने इसे दण्ड दिया है।''

उसी समय सुबल ने अपने बँधे हुए हाथ हिलाये। श्यामसुन्दर सोचने लगेह्वह्वसुबल बहुत व्याकुल है मुक्त होने के लिए।

श्यामसुन्दर ने उपवन में प्रवेश किया।

कुछ दूर चले होंगे श्यामसुन्दर। सुबल की पीठ स्पष्ट दिखलायी पड़ने लगी थी।

खिलखिला कर सखियों के समूह ने श्यामसुन्दर को घेर लिया। चित्रा ने आगे बढ़ कर सुबल के हाथों में बँधी चूनरी खोल दी और उसी चूनरी से श्यामसुन्दर के हाथ बाँध दिये।

नटखट बालिका की तरह प्रभावती ताली बजाते हुए हँसी।

श्यामसुन्दर ने देखाह्वह्वपास आ कर सुबल अपनी पगड़ी उतार रहा था और प्रकट हो रहा था एक दूसरा ही रूपह्वह्वतुंगविद्या सामने खड़ी मुस्करा रही थी।

''मैया री!'' श्यामसुन्दर के मुँह से आश्चर्य-भरी चीख निकली।

चम्पकलता बोलीह्वह्व''श्यामसुन्दर जी, मैं अपनी चूनरी बिछाती हूँ। आप इस पर विराजमान होइए।''

विशाखा ने श्यामसुन्दर के बँधे हुए बाजुओं को पकड़ कर उन्हें चूनरी पर बिठा दिया और हाथ जोड़ कर उनके चरणों की ओर झुकती हुई बोलीह्वह्व'कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों के नायक कन्हैया जी, मैं आपको प्रणाम करती हूँ।''

श्यामसुन्दर कुछ नहीं बोले। बस, मुस्करा दिये।

''अब हमारे साथ होली खेलोह्वह्व'' कह कर ललिता ने जल से गीला किया हुआ गुलाल उनके मुख पर पोत दिया और खिलखिला कर हँसने लगी।

श्यामसुन्दर चूनरी से हाथ निकालने का प्रयास करने लगे।

'न, न, ब्रह्माण्डनायक जी, यह गड़बड़ न करोह्वह्व'' कहते हुए सुदेवी ने श्यामसुन्दर के हाथों के बन्धन को कस दिया।

तभी चम्पकलता ने हँसते हुए रंग से भरी हुई पूरी गगरी श्यामसुन्दर पर उलट दी।

श्यामसुन्दर सिर झुकाये हुए रंग-स्नान करते रहे।

चित्रा ने श्यामसुन्दर की चिबुक पकड़ कहाह्वह्व ''देवाधिपति! मुक्त होने के लिए किसी को बुलाना चाहो, तो बुला लो।''

सब सखियाँ हँसने लगीं।

प्रभावती ने आँखें मटकाते हुए कहाह्वह्व''दाऊ भैया को बुला दें?''

सुदेवी ने हँसते हुए पूछाह्वह्व''यशोदा मैया को बुला लाऊँ।''

ललिता ने मुस्कराते हुए कहाह्वह्व''कहो तो नन्दबाबा को बुला दूँ?''

सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सच्चिदानन्द, देवदेवेश्वर ब्रह्म सखियों के समक्ष बन्दी बना हुआ नीची दृष्टि किये हुए मुस्करा रहा था।

प्रेम-राज्य में ऐसा ही होता है।

यह चूनरी का बन्धन नहीं था। यह प्रेम-डोर का बन्धन था।

कितना असाधारण दृश्य था! आकाश में रथारूढ़ सुर-वनिताएँ तथा सुरगण यह दृश्य देख-देख कर मुग्ध हो रहे थे और पुष्पों की वर्षा कर रहे थे।

इसके बाद प्रभावती ने सर्वशक्तिमान् ब्रह्म के हाथों को चूनरी के बन्धन से मुक्त किया।

श्यामसुन्दर ने पैंतरा बदल कर माधवी के हाथों से रंग से भरी पिचकारी छीन ली और प्रभावती को ऊपर से नीचे तक भिगो दिया।

फिर उन्होंने दूर खड़े सखाओं को पास आने का संकेत दिया।

सखाओं की टोली आ पहुँची। श्रीदाम और भद्रसेन मदनसुखदा कुंज से होली खेलने का सामान उठा लाये।

सखागण और सखियाँ पानी में रंग, अगरु और केसर मिला कर रंग तैयार करने लगे।

सिन्दूर, कपूर और फूलों से बनी हुई गेंदें एक स्थान पर रख दीं मधुमंगल ने।

पंचद्रव्य[1] के चूर्ण से भरी हुई लाख की कुप्पियाँ[2] गेंदों के पास ही रख दीं भद्रसेन ने।

वंशीधर ने वंशी कमर में दाहिनी ओर खोंस ली। किशोरी जी ने सलज्ज भाव से उन्हें पुष्पों से बने बाण और धनुष पकड़ा दिये।

बाणों को वंशीधर ने बायीं ओर कमर में खोंस लिया। श्रीदाम ने उन्हें पिचकारी पकड़ा दी।

श्यामसुन्दर ने धनुष कन्धे पर रखा और पिचकारी से रंग डालने लगे। उनकी पिचकारी की एक-एक धारा अनेक-अनेक धाराएँ बन कर सखियों को ऊपर से नीचे तक भिगोने लगी।

सखा-सखी एक-दूसरे पर रंग डालने लगे और गेंदें फेंकने लगे। वे सब सुगन्धित रंग की बौछारों से सराबोर हो गये। गेंदों की मार के कारण सिन्दूर, कपूर और फूलों की वर्षा में नहाये हुए उन सबको पहचानना कठिन हो गया। चारों ओर फूलों और कपूर की सुगन्ध फैल गयी।

इसके बाद वे एक-दूसरे पर लाख की कुप्पियाँ फेंकने लगे। उनके अन्दर भरा हुआ सुगन्धित चूर्ण उनके तन को ही नहीं, मन को भी सुवासित करने लगा और रंग के पानी के साथ मिल कर पंक बन गया।

गुलाल के रंग-बिरंगे कणों की छटा ने नीले आकाश को बहुरंगी बना दिया।

फिर श्यामसुन्दर सखियों पर पुष्प-बाणों से पुष्पों की वर्षा करने लगे।

थोड़ी देर बाद उन्होंने कमर से वंशी निकाली और उसे बजाने लगे।

आनन्द-रस बह निकला।

रस-स्वरूप ब्रह्म के सान्निध्य में उस आनन्द-रस का पान करने वाले वे सारे सौभाग्यशाली सखा-सखी अपनी सुधबुद्ध खो बैठे।

रसिकेश्वर ने रस की धूम मचा दी। उनकी वंशी-ध्वनि ने होली के रस-महोत्सव को मधुरातिमधुर बना दिया।

तभी सुबल आया भागा-भागा, चिल्लाता हुआह्नह्न ''कन्हैया, कन्हैया, मैं आ गया।''

उसने श्यामसुन्दर को अपने आलिंगन में ले लिया।

सब सखियों ने श्यामसुन्दर के चरणों में प्रणाम किया।

अन्त में किशोरी जी ने श्यामसुन्दर के चरणों में शीश झुकाया। प्रभावती श्यामसुन्दर को चंचल दृष्टि से देखते हुए मुस्करायी और बोलीह्नह्न''ब्रह्माण्डनायक जी, जो-जो वचन दिये हैं, उन्हें याद रखना, नहीं तो फिर...।''

कुछ देर पहले जिसको सखियों ने बन्दी बना लिया था, वह ब्रह्माण्डनायक प्रभावती की एक उँगली जोर से दबा कर सखाओं सहित भाग निकला।

संगीत-प्रवीणा तुंगविद्या ने तान छेड़ दीह्नह्न''आयी होली आयी कन्हैया! आयी होली आयी।'' ***(समाप्त)***

---

[1] कपूर, कुंकुम, केसर, अगरु और चन्दन। [2] इन कुप्पियों का अति पतला आवरण फेंकने पर फूट जाता था।

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

*''**शिवानन्द होम उन अभावग्रस्त एवं मरणासन्न लोगों की प्रेमपूर्ण देख-रेख का केन्द्र है जो सड़क के किनारे पड़े हुए पाये जाते हैं तथा जिनकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं है।**'' (स्वामी चिदानन्द)* स्वामी जी महाराज ने अपने बेजोड़, पूरे के पूरे एवं सहज प्रेम के जीवन्त उदाहरण के द्वारा इस सेवा को स्वयं प्रारम्भ किया था। 'शिवानन्द होम' उन आवास विहीन लोगों को डॉक्टरी सुविधाएँ प्रदान करता है जिन्हें इलाज के लिए भरती होने की आवश्यकता होती है। रोग की स्थिति के ऊपर यह निर्भर करता है कि चिकित्सा की थोड़े समय के लिए आवश्यकता होगी अथवा लम्बे समय तक। प्रायः दीर्घकालीन चिकित्सा के ही रोगी आते हैं। अधिकतर होता यह है कि रोग की बहुत देर से उपेक्षा की जाती रही होती है, और नये भरती होने वाले रोगी बहुधा जिस रोग की चिकित्सा के लिए भरती किये गये होते हैं, उसके साथ-साथ आन्त्र-ज्वर, कृमि-संक्रमण, रक्ताल्पता, त्वचा-संक्रमण इत्यादि अन्य कई रोगों से भी ग्रसित होते हैं।

'शिवानन्द होम' आवास विहीन लोगों के लिए एक 'घर' है। यों तो चार दीवारें मिल कर एक निवास-स्थान, एक मकान बना देती हैं; किन्तु 'घर', 'मकान' से कुछ अलग अर्थ रखता है, यह मकान से कुछ भिन्न, कुछ उच्च भाव लिये हुए होता है। कई बार लोग अपने निवास-स्थान में रहते हुए भी बेघर जैसे हो सकते हैं; और कभी-कभी आवास विहीन व्यक्ति भी, आवश्यक नहीं है कि बेघर ही हो। ऐसा स्थान जहाँ व्यक्ति का हृदय सुख, आराम, सान्त्वना और सुरक्षा अनुभव करता हो, घर कहा जा सकता है। ऐसे लोग भी देखने को मिलते हैं जिन्हें अपना घर छोड़ कर भागना पड़ता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि अब वहाँ उनका सम्मान नहीं है। किसी रोग के कारण, मानसिक विकृति के कारण अथवा शारीरिक अक्षमता के कारण अब वे अपने ही परिवार में बोझ समझे जाने लगे हैं। दूसरी ओर, 'शिवानन्द होम' में थोड़े समय के लिए आने वाले रोगियों में से ऐसे लोग मिलेंगे जो मोहल्ले को अपना कहते हैं, अपना घर कहते हैं। कई बार किसी को 'जहाँ से आये हो, वहीं वापस चले जाओ' कहना अत्यन्त कठिन हो जाता है, जब कि उसकी स्थिति 'बेघर' जैसी होह्वह्वअपने ही घर में या बाहर, कहीं भी। नितान्त एकाकीपन की समस्या अथवा त्याग दिये जाने के कष्ट, अथवा आपके अस्तित्व के होने न होने से बेपरवाह होने का दर्द या पूरी तरह भुला दिया जाना, ये सब ऐसे गहरे दुःख हैं जिन्हें दूर करना इतना सरल नहीं है। इस घाव के चिह्न अत्यन्त कष्टदायक और गहरे होते हैं। शारीरिक चोट की चिकित्सा तो औषधियों से की जा सकती है; किन्तु अपमानित किये जाने, बहिष्कृत और ठुकरा दिये जानेह्वह्ववह भी अपने निकटतम सगे-सम्बन्धियों द्वाराह्वह्वयह घाव बहुधा दीर्घकालीन रोग बन जाते हैं, ऐसे घाव, जो जरा से कुरेद दिये जाने पर पुनः रिसने लग जाते हैं; इनकी चिकित्सा तो केवल स्वयं प्रभु के प्रेमपूर्ण स्पर्श से ही सम्भव है, प्रभु-नाम-स्मरण से, अपने निज-स्वरूप का स्मरण करने से ही सम्भव हैह्वह्वगुरुदेव के शब्दों में, ''मैं यह शरीर नहीं, यह मन नहीं, मैं तो अमर आत्मा हूँ।'' उनकी करुणा और आशीर्वाद हम सब पर, उनके उन सब रोगियों पर हो जो उपेक्षा और विस्मरण के कष्टों से पीड़ित हैं!

ॐ गुरुदेव जय गुरुदेव।
गुरु हमारे मन-मन्दिर में, गुरु हमारे प्राण,
सारे विश्व का वो है दाता नारायण भगवान्।
ॐ गुरुदेव जय गुरुदेव।

''हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें। तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें। सदा तुम्हारा ही स्मरण करें। सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें। तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो! सदा हम तुममें ही निवास करें।'' **स्वामी शिवानन्द**

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दिसम्बर २०१२ तथा जनवरी २०१३ में सांस्कृतिक यात्राएँ कीं।

श्री स्वामी जी महाराज श्री गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पावन जन्म-स्थली पत्तमडै में १२ दिसम्बर २०१२ से १६ दिसम्बर २०१२ तक रहे। स्वामी शिवानन्द सेंटीनरी चैरिटेबिल हास्पिटल (जिसकी स्थापना श्री गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी के जन्मशताब्दी वर्ष में हुई थी तथा जिसने अपनी अमूल्य सेवाओं के पच्चीस वर्ष पूरे कर लिये हैं) की रजत जयन्ती का समारोह दिसम्बर २०१२ में मनाया जा रहा था। इस अवसर पर इस समारोह के एक अंग के रूप में १४ से १६ दिसम्बर तक एक राज्य-स्तरीय डिवाइन लाइफ सोसायटी कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया था। श्री स्वामी जी महाराज ने इस कान्फ्रेन्स में इन तीनों दिनों तक भाग लिया। १४ दिसम्बर को श्री स्वामी जी महाराज ने 'ॐ' झण्डा फहराया और इस कान्फ्रेन्स के शुभारम्भ के प्रतीक के रूप में दीप-प्रज्वलन किया। १४ तथा १५ दिसम्बर को श्री स्वामी जी महाराज ने प्रवचन तथा आशीर्वाद दिये। भारत तथा विदेश के प्रतिनिधियों ने एक बड़ी संख्या में इस कान्फ्रेन्स में भाग लिया। यह कान्फ्रेन्स अत्यन्त सफल रही।

१६ दिसम्बर को स्वामी शिवानन्द सेंटीनरी हास्पिटल का रजत जयन्ती समारोह आयोजित किया गया। श्री स्वामी जी महाराज ने इस समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया। इस समारोह का उद्घाटन उच्च न्यायालय, चेन्नै के न्यायाधीश माननीय श्री वी. रामा सुब्रमनियन ने किया। इस अवसर पर श्री स्वामी जी महाराज ने प्रवचन दिया तथा आशीर्वाद प्रदान किये।

१५ दिसम्बर को श्री स्वामी जी महाराज ने हास्पिटल में स्वामी शिवानन्द मेमोरियल ट्रस्ट के न्यासीमण्डल की एक सभा में भाग लिया।

फरीदाबाद में आस्ट्रेलिया के श्री राधाकृष्ण शर्मा जी ने २१ से २८ दिसम्बर तक एक भागवत सप्ताह का आयोजन किया था। श्री शर्मा जी के अनुरोध पर श्री स्वामी जी महाराज इस आयोजन के प्रथम दिवस के कार्यक्रम में उपस्थित रहे तथा उस दिन पूर्वाह्न में एक प्रवचन भी दिया।

श्री स्वामी जी महाराज की दूसरी यात्रा ४ जनवरी २०१३ से प्रारम्भ हुई।

भुवनेश्वर (ओडिशा) में ७ से ९ जनवरी २०१३ तक 'संस्कृति भारती' के तत्त्वावधान में एक तृ-दिवसीय 'वर्ल्ड उड़िया समाज कान्फ्रेन्स' का आयोजन किया गया था। इस कान्फ्रेन्स के संयोजक श्री श्रीकान्त नायक के आग्रहपूर्ण निमन्त्रण पर श्री स्वामी जी महाराज ने ७ जनवरी को इस कान्फ्रेन्स में भाग लिया। इस कान्फ्रेन्स का मोटो थाह्नह्न'अत्युत्तम मानव, विकसित राष्ट्र, सामाजिक समृद्धि'। कान्फ्रेन्स के उद्देश्य थेह्नह्नशैक्षिक पद्धति में नैतिक, आध्यात्मिक तथा मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग द्वारा सामान्य नागरिकों का सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास तथा श्रेष्ठ नागरिक तैयार करना एवं एक विकसित उड़ीसा राज्य तथा भारतीय राष्ट्र के निर्माण का दृढ़ संकल्प लेना। इन उद्देश्यों के पीछे मुख्य जोर इस बात पर था कि सर्वोत्तम चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण हो, क्योंकि केवल तभी सम्यक् मानव-सेवा, न्याय, कर्म-निष्ठा, सत्यनिष्ठ आचरण, सार्वभौमिक भ्रातृत्व तथा राष्ट्रप्रेम के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो सकेगी। श्री स्वामी जी महाराज ने इस कान्फ्रेन्स का उद्घाटन किया तथा प्रतिभागियों को सम्बोधित भी किया।

श्री स्वामी जी महाराज ७ से १० जनवरी तक बालीगुआली-स्थित स्वामी चिदानन्द हरमिटेज आश्रम में रहे।

अपने स्वर्ण जयन्ती समारोह के एक अंग के रूप में द डिवाइन लाइफ सोसायटी, भुवनेश्वर शाखा ने ३५ वीं अखिल ओडिशा डिवाइन लाइफ सोसायटी कान्फ्रेन्स का आयोजन किया था। इस शाखा की स्थापना के पचास वर्ष पूरे हो चुके हैं। यह शाखा पचास वर्षों की अवधि में परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के मिशन को पूरा करने के लिए अत्युत्तम सेवा-कार्य करती रही है।

इस कान्फ्रेन्स की ओर से १२ जनवरी को एक प्रेस कान्फ्रेन्स भी आयोजित की गयी जिसमें श्री स्वामी जी महाराज ने भाग लिया। वह १७ से १९ जनवरी तक इस (अखिल ओडिशा डिवाइन लाइफ सोसायटी) कान्फ्रेन्स की पूरी अवधि में उपस्थित रहे तथा उसकी अध्यक्षता की। उन्होंने १७ जनवरी को 'डिवाइन लाइफ सोसायटी झण्डा' भी फहराया। इस कान्फ्रेन्स में ऋषिकेश-स्थित कैलास आश्रम के अध्यक्ष परम पूज्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज, द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, परम पूज्य गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी तथा अनेक प्रतिष्ठित सन्तों और विद्वानों ने भी भाग लिया। पूरे भारतवर्ष से आये हुए लगभग ६००० व्यक्तियों ने इस कान्फ्रेन्स में भाग लिया। सहस्रों की संख्या में स्थानीय जनता ने भी इस कान्फ्रेन्स के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया। श्री स्वामी जी महाराज ने कान्फ्रेन्स के विभिन्न सत्रों में भाग लिया। उन्होंने प्रतिदिन प्रातःकालीन ध्यान सत्रों तथा पूर्वाह्न और सायंकालीन सत्रों में प्रवचन-आशीर्वाद दिये।

इस कान्फ्रेन्स का आयोजन अत्यन्त सुचारु ढंग से किया गया था तथा विभिन्न व्यवस्थाएँ भी अत्युत्तम थीं। आयोजकों ने इस आयोजन पर सभी दृष्टियों से विचार करने का पूरा-पूरा प्रयास किया था। यह कान्फ्रेन्स पूर्णतः सफल रही। सभी प्रतिभागी अत्यन्त सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहे।

अपनी यात्रा की अवधि में श्री स्वामी जी महाराज खण्डगिरी-भुवनेश्वर-स्थित स्वामी शिवानन्द सेंटीनरी ब्यायज़ हाईस्कूल भी गये। १५ जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज ने इस विद्यालय की मैनेजिंग कमेटी की एक सभा में भाग लिया। उसी दिन आयोजित एक अन्य (विशेष) सभा में श्री स्वामी जी महाराज ने अध्यापकों को सम्बोधित किया तथा उन्हें आशीर्वाद दिया। उन्होंने विद्यालय की प्रार्थना-सभा में भी भाग लिया तथा विद्यार्थियों को आशीर्वाद प्रदान किया।

२० जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज ने ओ. टी. वी. के प्रार्थना चैनेल के लिए इंटरव्यू दिया। इस कार्यक्रम का आयोजन उपर्युक्त कान्फ्रेन्स के आयोजकों ने किया था। इस इंटरव्यू में श्री स्वामी जी महाराज इस कान्फ्रेन्स तथा दिव्य जीवन के विषय में बोले।

२० जनवरी को ही श्री स्वामी जी महाराज ने श्री नीलाचल तत्वसंधान परिषद, पुरी तथा इन्स्टीट्यूट आफ टेकनिकल एण्ड एजूकेशनल रिसर्च (आई. टी. ई. आर.) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भगवान् जगन्नाथ की सेवा तथा उनके सेवकों की परम्परा' विषय पर आई. टी. ई. आर. विश्वविद्यालय के परिसर में आयोजित एक सेमिनार में भाग लिया। उन्होंने इस सेमिनार का उद्घाटन किया तथा प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए एक संक्षिप्त भाषण भी दिया।

२० जनवरी को ही उड़िया दैनिक 'प्रमेय' के प्रतिनिधि के अनुरोध पर श्री स्वामी जी महाराज ने इस दैनिक के लिए इंटरव्यू दिया। इस इंटरव्यू में उन्होंने वास्तविक शान्ति तथा प्रसन्नता की प्राप्ति हेतु जीवन को आध्यात्मिक बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

२० जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज ने ओडिशा से पश्चिम बंगाल के लिए प्रस्थान किया। द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पश्चिम बंगाल ने हामिरागाछी में २१ से २५ जनवरी तक एक वार्षिक साधना शिविर का आयोजन किया था। इस शिविर में भाग लेने के लिए श्री स्वामी जी महाराज पश्चिम बंगाल पहुँचे। २१ जनवरी को श्री स्वामी जी महाराज ने इस शिविर का उद्घाटन किया तथा प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिया। इस शिविर की पूरी अवधि में श्री स्वामी जी महाराज ने (इस शिविर के) विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया। प्रातःकालीन सत्रों में श्री स्वामी जी महाराज ने आध्यात्मिक साधना के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए साधकों को सम्बोधित किया। पूर्वाह्न तथा अपराह्न सत्रों में भी उन्होंने प्रवचन दिये। रात्रि सत्संग में उन्होंने प्रतिदिन भाग लिया। यह साधना शिविर अति सुचारु ढंग से आयोजित किया गया था तथा कार्यक्रमों के निर्विघ्न संचालन हेतु तथा प्रतिभागियों के लिए उत्तम व्यवस्था की गयी थी। देश-भर के लगभग ३०० साधकों ने इस शिविर में भाग लिया। यह शिविर अत्यन्त सफल रहा तथा प्रतिभागी इससे अत्यधिक लाभान्वित हुए। प्रतिभागियों की दृष्टि में यह शिविर अति प्रेरणादायक तथा लाभप्रद था। □ □ □

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अम्बाला (हरियाणा): प्रत्येक रविवार एवं मंगलवार को भजन-कीर्तन एवं ध्यान इत्यादि की नियमित गतिविधियों सहित सत्संग चलते रहे। ३ दिसम्बर २०१२ को महामन्त्र संकीर्तन तथा ३१ को 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र जप दो घण्टे तक किया गया। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब सेवा संघ में निष्काम होमियोपैथी सेवा तथा जल सेवा नियमित रूप से चलती रही।

आस्का (ओडिशा): नियमित सत्संग के साथ-साथ, शाखा द्वारा २ दिसम्बर को एक दिवसीय साधना शिविर का आयोजन, जिसमें विभिन्न शाखाओं के भक्त भी सम्मिलित हुए। सभी को प्रसाद वितरण सहित समाप्ति की गयी।

बैंगलूरु (कर्नाटक): शाखा में नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। १६ दिसम्बर को अखण्ड कीर्तन तथा उसके उपरान्त गुरु गीता पारायण एवं मंगल आरती; २३ दिसम्बर को गीता जयन्ती, २५ को हनुमान जयन्ती पर हनुमान चालीसा एवं २७ को दत्तात्रेय जयन्ती को भजन एवं मंगल आरती की गयी।

बरबिल (ओडिशा): शाखा द्वारा साप्ताहिक सत्संग एवं भक्तों के निवास पर सत्संग; प्रत्येक रविवार को बाल विकास कक्षाएँ, २४ दिसम्बर को साधना दिवस पर पादुका पूजा, गीता पाठ तथा सायंकालीन सत्संग एवं शिवानन्द धर्मार्थ होमियोपैथिक डिस्पेंसरी द्वारा ६०० रोगियों की चिकित्सा की गयी।

बारिपदा (ओडिशा): २ दिसम्बर २०१२ को शाखा द्वारा एक दिवसीय साधना दिवस; २५ को गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में गीता ज्ञान यज्ञ एवं प्रीतिभोज; रविवार को चल सत्संग; २६ को विशेष सत्संग में नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए।

बल्लारि (कर्नाटक): पूजा एवं गुरु पादुका पूजा सहित शाखा द्वारा दैनिक सत्संग; प्रत्येक रविवार को अष्टोत्तर अर्चना एवं उसके उपरान्त महामृत्युंजय, शान्ति मन्त्र विश्व-कल्याण हेतु, महामंगल आरती तथा प्रसाद वितरण किया गया।

ब्रह्मपुर (ओडिशा): नियमित गतिविधियाँ शाखा में चलती रहीं। १६ दिसम्बर को २०० भक्तों सहित साधना दिवस; सद्गुरुदेव के १२५ वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में ५० विद्यार्थियों सहित कार्यक्रम, जिसमें परीक्षा ली गयी, प्रमाणपत्र, पारितोषिक एवं विशेष साहित्य वितरण, २३ दिसम्बर को गीता जयन्ती, २५ को क्रिसमस तथा ३१ को विशेष सत्संग का आयोजन किया गया।

भंजनगर (ओडिशा): शाखा द्वारा नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त ३ से ९ दिसम्बर तक श्रीमद्भागवत प्रवचन कार्यक्रम; ९ दिसम्बर को मासिक साधना दिवस पर भजन-कीर्तन, गुरु पादुका पूजा तथा बाबा श्री किशोरी चरण दास महाराज द्वारा श्रीमद्भागवत पर प्रवचन; १५ दिसम्बर को संक्रान्ति दिवस, २३ को गीता-जयन्ती पर गीता जी के ७०० श्लोकों पर ७०० आहुतियाँ समर्पित तथा आरती एवं प्रसाद वितरण किया गया।

भेल (हरिद्वार): शाखा द्वारा २३ दिसम्बर को गीता जयन्ती का आयोजन किया गया जिसमें गीता विज्ञान ट्रस्ट आश्रम, कनखल, हरिद्वार के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज ने अपनी उपस्थिति देते हुए गीता पर प्रवचन दे कर श्रोताओं को आशीर्वादित किया।

भीष्मगिरि (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक सत्संग एवं पूजा; प्रत्येक रविवार को अर्चना; परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की विशेष पूजा एवं अर्चना के साथ भजन-कीर्तन, महामृत्युंजय मन्त्र जप, विश्व-शान्ति हेतु शान्ति मन्त्र तथा प्रार्थना एवं मंगल आरती की गयी।

भुज-कच्छ (गुजरात): शाखा द्वारा नियमित सत्संग तथा आध्यात्मिक एवं शिक्षाप्रद प्रवचन विशेषज्ञों द्वारा; 'गठिया-रोग' विषय पर भौतिक चिकित्सक द्वारा विशेष व्याख्यान तथा निदर्शन, जिससे बहुत से वृद्ध लोगों के घुटनों के रोग में लाभ हुआ। प्रत्येक कार्यक्रम के उपरान्त भजन-कीर्तन के कार्यक्रम हुए।

विलासपुर (छत्तीसगढ़): सत्संग नियमित रूप से; भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी तथा उड़ीसा के साधु भागवत जी इसमें सम्मिलित हुए तथा भगवान् श्री कृष्ण एवं सद्गुरुदेव की महिमा का वर्णन करते हुए प्रवचन दिये। १९ दिसम्बर को मुख्यालय आश्रम से श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी शाखा

में आये, एक विशेष सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें बहुत से भक्त सम्मिलित हुए।

चण्डीगढ़ : नियमित गतिविधियाँ शाखा में चलती रहीं। विशेष गतिविधियाँह्वह्व१५ से ३१ दिसम्बर तक योग-वेदान्त का एक द्वि-साप्ताहिक संक्षिप्त कोर्स मुख्यालय के श्री स्वामी अखिलानन्द जी, श्री स्वामी रामराज्यम् जी तथा श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी के निर्देशन में आयोजित किया गया। ५ से २२ दिसम्बर तक गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में गीता के एक अध्याय का नित्य पारायण, अर्थ एवं अध्ययन उत्साहपूर्वक किया गया तथा २३ को सम्पूर्ण गीता के ७०० श्लोकों का पारायण अत्यन्त उत्साह सहित इन तीनों स्वामी जी के पावन सान्निध्य में किया गया। इन तीनों स्वामी जी के निर्देशनों एवं शिक्षाओं से सभी साधकों को अपनी साधना के मार्ग में लाभ मिला। ८ दिसम्बरह्वह्व'शिवानन्द दिवस' को अखण्ड महामन्त्र जप किया गया, जिसमें श्री स्वामी अखिलानन्द जी तथा श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी सक्रियतापूर्वक इसमें सम्मिलित हुए। उनके निर्देशन में २ चल सत्संग भी आयोजित किये गये।

छत्रपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक ८ और २४ को श्री गुरु पादुका पूजन किया गया। २४ से २६ दिसम्बर तक गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में ६ अध्यायों का नित्य पाठ तथा बाद में वासुदेव पूजन किया गया। १५ दिसम्बर को 'धनु संक्रान्ति' पर श्री राम चरित मानस, 'सुन्दरकाण्ड' पारायण सत्संग भवन में किया गया।

दिगपहंडी (ओडिशा): शाखा द्वारा सत्संग नियमित रूप से चलते रहे। 'धनु संक्रान्ति' १५ दिसम्बर की प्रातः विश्व-शान्ति हेतु हवन; २४ को गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में गीता स्वाध्याय, पादुका पूजा तथा आरती की गयी।

गंगटोक (सिक्किम): १ जनवरी को शाखा द्वारा आगामी वर्ष की गतिविधियों के निर्धारण हेतु सभा की गयी जिसके बाद सत्संग तथा विश्व-शान्ति हेतु महामन्त्र जप किया गया। एक पाँच दिवसीय योग शिविर, एक योग शिविर स्कूल के विद्यार्थियों हेतु, भक्तों के आवास पर सत्संग तथा नये सदस्य बनाने के कार्यक्रम का निर्णय किया गया।

जामनगर (गुजरात): शाखा द्वारा मुख्यालय के श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के पावन निर्देशन में योगासन, प्राणायाम, कपालभाति, सूर्यनमस्कार, ॐ का उच्चारण इत्यादि करवाये गये। अन्तिम दिन स्वामी जी ने बताया कि 'दिव्य जीवन क्या है तथा समाज में कैसे रहना चाहिए।' सभी परीक्षार्थी अत्यन्त प्रभावित एवं लाभान्वित हुए। शाखा-अध्यक्ष डा. टान्ना ने स्वामी जी तथा कार्यक्रम में सहायक अन्य सभी का धन्यवाद किया।

जयपुर (ओडिशा): प्रत्येक रविवार एवं गुरुवार को शाखा द्वारा सत्संग। शिवानन्द दिवस ८ दिसम्बर को हवन; २३ दिसम्बर एकादशी एवं गीता जयन्ती को श्री अशोक कुमार मलहोत्रा के निवास पर सम्पूर्ण गीता पाठ तथा प्रत्येक श्लोक के साथ द्वादशाक्षर मन्त्र का सम्पुट लगा कर आहुतियाँ डाली गयीं। इसमें दिव्य जीवन संघ के ८० भक्त सदस्य सम्मिलित हुए। तीन चल सत्संग भी किये गये।

कबिसूर्यनगर (ओडिशा): दैनिक पूजा के अतिरिक्त शाखा द्वारा प्रत्येक रविवार एवं गुरुवार को सत्संग; कार्तिक मास में नित्य प्रातःकालीन ध्यान एवं सायंकालीन सत्संग होते रहे; नव-वर्ष दिवस पर ५०० पैकेट प्रसाद तथा विश्व-प्रार्थना के कार्ड शाखा के शुभ-चिन्तकों तथा अन्य भक्तों को बाँटे गये।

कंटाबांझी (ओडिशा): शाखा द्वारा रविवार को ॐ का दीर्घ उच्चारण, प्रत्येक भक्त द्वारा गीता के एक-एक श्लोक का पाठ तथा शान्ति-पाठ सहित समापन; भजन-कीर्तन के सभी कार्यक्रमों का आध्यात्मिक गुरु श्री राधारमण दास द्वारा निर्देशन; गीता जयन्ती २३ दिसम्बर को श्री गुरु पूजा, श्री कृष्ण पूजा, गीता के ७०० श्लोकों का पाठ, आरती, होम तथा प्रसाद वितरण किया गया।

लांजीपल्ली (ओडिशा): मास के प्रत्येक रविवार को ६० सदस्यों की भागीदारी में सत्संग चलते रहे। गुरुदेव के १२५ वें जन्म दिवस पर एक विशेष साधना दिवस, नारायण सेवा तथा वस्त्र दान, वृक्षारोपण, गौसेवा तथा सद्गुरुदेव की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसारण; शाखा द्वारा विद्यालयों में भी कार्यक्रम आयोजित किये गये।

लांजीपल्ली महिला शाखा, ब्रह्मपुर (ओडिशा): सायंकालीन दैनिक गतिविधियों के अतिरिक्त शाखा द्वारा १५ दिसम्बर को १०८ बार हनुमान चालीसा पाठ; नारायण सेवा में लगभग ४०० लोगों को भोजन और १५० निर्धन एवं विकलांग लोगों को श्री स्वामी श्रद्धास्वरूपानन्द जी की उपस्थिति में चादरें बाँटी गयीं। २३ दिसम्बर, गीता जयन्ती के अवसर पर भक्तों एवं स्थानीय लोगों द्वारा गीता के श्लोकों का पारायण किया गया।

माधवपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा शिवानन्द क्षेत्रम् एवं साईं मन्दिर में नियमित सत्संग; डा. एम. एस. आर. शास्त्री द्वारा

निःशुल्क चिकित्सा शिविर तथा शिवानन्द क्षेत्रम् में २५ निर्धन एवं जरूरतमन्दों के लिए नारायण सेवा चलती रही। डी. एल. एस. विशाखपत्तनम् शाखा के आग्रह पर, २ दिसम्बर को काकिनाडा डी. एल. एस. शाखा ने कार्तिक समाराधना में भाग लिया। शिवानन्द क्षेत्रम् में भगवान् श्री राम, सीता, लक्ष्मण एवं हनुमान जी के विग्रह की स्थापना की गयी। मूर्तिदान श्रीमती एवं श्री राममोहन राव द्वारा किया गया; ९ दिसम्बर को होम, शान्ति-कल्याणम् एवं महाप्रसाद वितरण के कार्यक्रम में २५० सदस्य सम्मिलित हुए।

मोइरांग (मणिपुर): दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज के शुभ आगमन पर शाखा द्वारा विशेष सत्संगों का आयोजन किया गया; ५ अक्तूबर को वे दिव्य जीवन संघ मोइरांग भवन पधारे; परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने उपस्थित सदस्यों को सम्बोधित करते हुए 'दिव्य जीवन 'विषय पर संक्षिप्त एवं प्रेरणाप्रद प्रवचन दिया। २५ नवम्बर को भगवान् श्री कृष्ण के पुष्पों से सुसज्जित चित्र को ले कर भजन-कीर्तन करते हुए लगभग १०० भक्तों सहित पावन 'हरि उत्थान' के अवसर पर डी एल एस मोइरांग के चतुर्दिक लगभग ७ किलोमीटर की पथ-परिक्रमा की।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): साप्ताहिक चल सत्संग तथा प्रत्येक शनिवार को मातृ सत्संग के अतिरिक्त दैनिक प्रातः-सायं शिवानन्द भजन मन्दिर में सत्संग नियमित रूप से चलते रहे। मुख्यालय आश्रम के श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी के निर्देशन में ५० विद्यार्थियों की भागीदारी सहित ८, ९ एवं १६ दिसम्बर को 'युवा-शिविर' का आयोजन; श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी तथा श्री ब्रह्मचारी पाण्डुराम (गुमरगुण्डा) एवं नन्दिनीनगर शाखा के श्री के. एस. ठाकर का समूह दुर्ग जिले के ५ स्कूलों तथा दन्तेवाड़ा जिले के २ स्कूलों में, सद्गुरुदेव की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार हेतु गये। साथ ही छत्तीसगढ़ की विभिन्न शाखाओं में भी गये; २३ दिसम्बर, गीता जयन्ती को गीता पारायण किया गया।

स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसिएशन, नई दिल्ली : अलग-अलग रविवार कोह्नह्नगीता पारायण, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण, गुरु पादुका पूजा, सुन्दरकाण्ड पारायण एवं ध्यान की गतिविधियों सहित नियमित सत्संग चलते रहे; ९ दिसम्बर को गीता प्रतियोगिता, जिसमें विभिन्न विद्यालयों से कुल ७० विद्यार्थी सम्मिलित हुए, प्रमाणपत्र तथा नकद धनराशि के पुरस्कार दिये गये। २३ दिसम्बर, गीता-जयन्ती को गीता जयन्ती महायज्ञ, जिसमें 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' सम्पुट सहित स्तोत्र-पाठ, भारी संख्या में भक्त सम्मिलित हुए, भण्डारे के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ; शाखा की पैट्रन (संरक्षिका) श्रीमती मोहिनी गिरी १५ विद्यार्थियों तथा २ प्राध्यापकों का ग्रुप एन. के. यू. अमरीकन यूनिवर्सिटी से ले कर आयीं तथा ६ दिनों का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। अमरीकन ग्रुप अत्यन्त प्रभावित हुआ।

राजकोट (गुजरात): शाखा द्वारा शिवानन्द साहित्य के ऊपर प्रवचन तथा श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन; रामचरित मानस, भगवद्गीता, अन्य संस्कृत श्लोक, भजन एवं गुरुदेव के साहित्य का पाठ आयोजित; नेत्र रोग शिविर, दन्त रोग शिविर, भौतिक चिकित्सा, हड्डियों सम्बन्धी रोगों से ग्रसित रोगियों की चिकित्सा, स्त्री रोग तथा अन्य शल्य-चिकित्सा अनिवार्य रोगों की चिकित्सा-सम्बन्धी शिविर आयोजित; जरूरतमन्दों की वित्तीय सहायता; दिसम्बर २०१२ के अन्तिम सप्ताह में श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के निर्देशन में 'बैंक ऑफ बड़ौदा रीक्रिएशन क्लब' के सहयोग से योगासन शिविर आयोजित; शाखा की एक संरक्षिका मुख्यालय आश्रम में अनुष्ठान हेतु १५ दिन रहीं तथा अपने आवास काल में कुष्ठ बस्ती लक्ष्मणझूला एवं ढालवाला के वासियों में साड़ियाँ, अन्य वस्त्र तथा १०,००० रुपये का राशन वितरित किया। शाखा द्वारा निर्धन विद्यार्थियों के लिए शिक्षण-कक्षाएँ तथा हायर सैकेण्डरी के १० विद्यार्थियों को स्कूली पुस्तकें, कापियाँ तथा अन्य शैक्षिक-सामग्री दी गयी।

राउरकेला स्टील टाउनशिप (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार को गुरु पादुका पूजा तथा ६ चल सत्संग आयोजित किये गये। ३ साधना दिवस, जिनमें गुरु पादुका पूजा, हनुमान चालीसा, गीता पाठ, भजन-कीर्तन, मन्त्र जप तथा प्रसाद सेवन सहित समाप्ति; गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में २६ दिसम्बर को कार्यक्रम रखा गया।

सालेपुर (ओडिशा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं; प्रत्येक रविवार को स्वामी शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय द्वारा स्वास्थ्य सेवा के अन्तर्गत ९१ रोगियों की चिकित्सा तथा निःशुल्क औषधि वितरित की गयी। स्थानीय विद्यालय/महाविद्यालय में योग-प्रशिक्षण, जिसमें ३२ अध्यापक/विद्यार्थियों ने भाग लिया। विशेष गतिविधियाँह्नह्न२८ अक्तूबर को ६ घण्टे का अखण्ड महामन्त्र जप किया गया।

साउथ बलण्डा (ओडिशा): नियमित पूजा एवं सत्संग के अतिरिक्त शाखा द्वारा ३ एवं २९ दिसम्बर को अखण्ड महामन्त्र जप

क्रमशः १२ और ३ घण्टे का विश्व-शान्ति एवं भातृभावना हेतु किया गया। ८ और २४ दिसम्बर को श्री गुरु पादुका पूजा एवं विशेष सत्संगों द्वारा 'शिवानन्द दिवस' और 'चिदानन्द दिवस' मनाये गये।

सुनाबेडा (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार एवं रविवार को सत्संग, जिसमें पादुका पूजा, भजन, कीर्तन, जप, पूजा, आरती तथा गुरुमहाराज की पावन पुस्तकों का अध्ययन; गीता जयन्ती को सेमिलिगुडा में चल सत्संग में गुरु पादुका पूजा, अर्चना, हवन इत्यादि किया गया। श्रीमती विजय लक्ष्मी ओझा द्वारा योगासन कक्षाओं का संचालन किया गया।

सुनाबेडा महिला शाखा (ओडिशा): शाखा द्वारा महामन्त्र संकीर्तन, श्रीमद्भागवत पाठ, गीता पाठ एवं महामृत्युंजय मन्त्र जप सहित दैनिक सत्संग चलते रहे। सामान्य सत्संग प्रत्येक रविवार सायं, बाल सत्संग अपराह्न में, नारायण सेवा मंगलवार को; बुधवार एवं शनिवार को महिला सत्संग, तथा शिवानन्द स्टडी सर्किल युवाओं हेतु, साप्ताहिक; विष्णु सहस्रनाम पाठ एवं अभिषेक प्रत्येक एकादशी को; प्रत्येक २४, चिदानन्द दिवस को १२ घण्टे का अखण्ड महामृत्युंजय मन्त्र जप तथा प्रत्येक संक्रान्ति की सन्ध्या को आश्रम परिसर में सुन्दरकाण्ड का पारायण चलता रहा।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा के भक्त २७ दिसम्बर को सत्संग के लिए वृद्धाश्रम में एकत्रित हुए; श्रीमती उमा सचदेव ने आश्रमवासियों को हॉरलिक्स पाउडर तथा बिस्कुट के पैकेट बाँटे, गुरुदेव के चित्र पर पुष्पहार समर्पण एवं प्रसाद वितरण के उपरान्त कार्यक्रम समाप्त हुआ। ५ दिसम्बर को श्रीमती एवं श्री के. सी. सचदेव के निवास पर हुए यज्ञ-हवन में सभी शाखा सदस्य सम्मिलित हुए। बाद में भण्डारा किया गया।

विदेशी शाखा

हांगकांग (चीन): शाखा द्वारा प्रत्येक शनिवार सायं को १ घण्टे महामन्त्र जप तथा द्वितीय शनिवार को हनुमान चालीसा; १९८७ को हांगकांग में गुरुदेव की जन्म शताब्दी मनाये जाने की विडियो दिखायी गयी। योग कक्षाएँ नियमित चलती रहीं। विशेष गतिविधियाँह्वह्व६ अक्तूबर को चुंग शा वन तथा नार्थ पौइंट योग केन्द्रों पर 'लामा फैरी डिजास्टर' में शहीद एवं घायल लोगों तथा विश्व-शान्ति हेतु महामृत्युंजय मन्त्र जप किया गया। ७ अक्तूबर को प्रारम्भिक योग प्रशिक्षण एक दिन के लिए हुआ। २० अक्तूबर को भजन गान सत्र तथा श्री प्रेम सम्तानी द्वारा २० भागीदारों को भजन का अर्थ और महत्त्व पर प्रवचन दिया गया।

सूचना

दिव्य जीवन संघ के संस्थापक सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के सभी अनुयायियों, भक्तों एवं शुभाकांक्षियों को यह सूचित किया जाता है कि मुख्यालय आश्रम के अन्तेवासियों में से एक अन्तेवासी **श्री स्वामी यतिधर्मानन्द जी**, जो आश्रम के ऑडियो-वीडियो विभाग में सेवा किया करते थे, १२ जुलाई २०१२ को दिव्य जीवन संघ मुख्यालय से सभी सम्बन्ध तोड़ कर अचानक, स्वेच्छा से आश्रम छोड़ कर चले गये हैं।

यह सूचना हम अपनी अँगरेजी की पत्रिका 'द डिवाइन लाइफ' तथा हिन्दी की पत्रिका 'दिव्य जीवन' में गुरुदेव के सभी अनुयायियों को यह सूचित करने के लिए दे रहे हैं कि स्वामी यतिधर्मानन्द जी अब शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश के अन्तेवासी नहीं हैं तथा उनका अब मुख्यालय आश्रम के साथ अथवा दिव्य जीवन संघ की भारत और विदेशों की किसी भी शाखा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।

प्रेसिडेन्ट
द डिवाइन लाइफ सोसायटी